FAIZANE TAJUSHSHARIAH JARI RAHEGA
ग़ौसे आज़म
की
तक़रीरें

खुत्बात हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०)

हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी(रह०अ०) के मवअज़ और खुत्बात का सिलसिला 521हि० में शुरू हुआ और 561हि० तक जारी रहा। इस अर्से के दौरान आपने बेशुमार तक़ारीर कीं। आपके वअज़ बड़े पुर असर होते थे इसलिए इन खुत्बात ने लोगों के दिलों की दुनिया बदल डाली। आपकी रूहानी तवज्जह और शीरीं ज़बान की तासीर ने बेशुमार इंसानों को राहे हक़ की तरफ गामज़न कर दिया। कई लोगों को ईमानी इसतहेकाम मिला। आपके वअज़ों से कुफ्र व शिर्क मांद पड़ गया बिदआत और ग़लत दीनी रसूम की इसलाह हुई और दीने हक़ में नोबहार आ गई। आपकी नूरानी महाफिल के वअज़ आज भी दिल में तलाशे हक़ की सच्ची तड़प पैदा करते हैं। ग़ाफिल लोगों को ग़फ्लत से बेदार करते हैं। भटके हुए लोगों को सिराते मुसतक़ीम मिलता है।

हज़रत ग़ौसे आज़म(रह०अ०) के खुत्बात और मवअज़ बिलाशुबह मुसलमानों के लिए मशअले राह हैं। ज़ाहिरी और बातिनी हालात को संवारने के लिए एक बैश-बहा खज़ाना हैं। उनके ज़रिये तालिबाने हक़ और सालकाने तरीक़त की राहनुमाई होती है। आपके ये खुत्बात "अलफतह रब्बानी" के नाम से इल्मी दुनिया में आज तक मेहफूज़ हैं। इस किताब में आपके रफीअ उश्शान खुत्बात व मवअज़ के महेज़ चन्द नमूने और इक़्तिबासात पेश किए जाते हैं। चूंके आपकी अस्ल तक़रीर अर्बी में होती थी इसलिए तर्जुमा और तलख़ीस के पढ़ने से अस्ल का लुत्फ और नफअ तो हासिल नहीं हो सकता क्योंके बअज़ अवक़ात नफ़्से मज़मून से ज़्यादा अंदाज़े बयान मोस्सर होता है। बहेर हाल इन इक़्तिबासात से आपके मवअज़ की शान और तासीर का अंदाज़ा हो सकता है।

ख़ुतबए सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

15 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोज़ हफ़्ता

*** औलिया अल्लाह के दिल पाक व साफ़ होते है वह मख़लूक़ को भूलते हैं और ख़ालिक़ को याद रखते हैं। दुनिया को भूलते हैं आख़िरत को याद रखते हैं तुम अपनी दुनियावी मसरूफ़ियतों की बिना पर उनकी शान व तमकेनत को नहीं देख सकते। तुम्हारे और उनके बीच एक ज़बरदस्त ख़ला (ख़ाली जगह) है।

*** अगर कोई मोमिन तुझे नसीहत करे तो सुन कर मुख़ालफ़त न करो क्यूँकि वह तेरे अन्दर वह बातें देखता है जो तू ख़ुद नहीं देख सकता। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है मोमिन मोमिन का आइना होता है। मोमिन अपने भाई मोमिन को सच्चे दिल से नसीहत करता है उसमें क्या ऐब है क्या ख़ूबियाँ हैं साफ़ साफ़ बयान कर देता है।

*** पाक है वह ज़ाते ज़ुलजलाल जिसने मेरे दिल में भी हमारे मोमिन भाईयों के नसीहत व ख़ैरख़्वाही की आमादगी पैदा कर दी। अब यही मेरा दिलचस्प मशग़ला है कि मैं तुमसे वह सच्ची बातें कहता जाऊँ और बताता जाऊँ जो मैं समझता हूँ, इसका कोई दुनियावी बदला मैं नहीं चाहता न उख़रवी बदला, बदला तो मेरा मअबूदे हक़ीक़ी ख़ुद होना चाहिए और यही मेरा अस्ल मक़सद है हाँ मुझे अपनी क़ौम की फ़लाह व कामरानी से ख़ुशी होती है उनकी तबाही मेरे दिल पर तीर

चलाती है अगर मैं किसी मुरीदे सादिक़ को कामयाब बामुराद देखता हूँ तो मेरा दिल अपने ख़ालिक़े काएनात के आगे बहुत ज़्यादा ख़ुशी के साथ सजदे में झुक जाता है।

*** ऐ ग़ुलाम! मैं तेरी इस्लाह को अपना मक़सद समझता हूँ अपने ज़ाती नफ़ा को अपना मक़सद नहीं समझता। मैंने इस मरहले को तय कर लिया है हाँ मैं तुझे इस रास्ते (यानी नेक रास्ते पर) पर चला कर तेरी दस्तगीरी (मदद) करना चाहता हूँ, तो तू मुझसे मदद ले और कामयाबी की राह पर तेज़ी के साथ रवाना हो ---- न तुमको ग़ुरूर अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबले में ज़ेब दे सकता है न मख़लूक़ के मुक़ाबले में बल्कि तुमको अपनी हैसियत पहचानना चाहिए तुम क्या थे? एक हक़ीर नुतफ़ा एक बहते पानी के क़तरों की तरह, बेजान तुम्हारा अन्जाम क्या होगा एक मुर्दा लाश जिसे कीड़े और कुत्ते खाने के लिए बेताब रहेंगे इसलिए जो शख़्स तुम्हें दुनिया की लालच व हिरस के लिए दुनिया के मग़रूर बादशाहों की चौखट पर माथा रगड़ना सिखाता है ताकि तुम्हें सोने चांदी के कुछ टके मिल जायें जिसको तुम अपनी क़िस्मत के हक़ीक़ी और जाएज़ टुकड़ों से ज़्यादा समझ रहे हो वह तुम्हें सख़्त गुमराही में डालने वाला शैतान है। याद रखो तुम्हारे लिए इस हिरस व लालच का नतीजा ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है ख़ुदा के पास वह बन्दा ज़्यादा सज़ा के लायक़ है जो अपने रिज़्क़ से बढ़कर रिज़्क़ चाहता है अगर तुम यह समझते हो कि दुनिया के यह बन्दे तुमको इतना ज़्यादा दे सकेंगे कि हक़ीक़ी तलब घिर जाएगा तो तुम तक़दीर के फ़ैसलों से ग़ाफ़िल हो, यह वसवसा तुम्हारे दिल में शैतान का डाला हुआ है तुम ख़ुदा के बन्दे नहीं अपने नफ़्स व हवस के बन्दे हो, शैतान के क़ैदी हो दिरहम व दीनार का तुम पर जादू चल गया है, कोशिश करो कि तुम्हें इस क़ैद से रिहाई मिले और रिहाई हासिल करने के लिए तुम्हें किसी कामिल रहनुमा की

ज़रूरत है। इसलिए रहनुमा की तलाश करो लेकिन ऐसा रहनुमा ज़ाहिरी आंखों के टटोलने से नहीं मिलता, दिल और बातिन की आंखों के ज़रिए ढूंढने से मिल सकता है। इस तलाश के लिए ईमान ज़रूरी है जब ईमान न हो तो दिल भी रौशन नहीं होता। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है :-

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

तर्जमा : इसलिए कि आंखें अंधी नहीं होतीं और लेकिन वह दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं।

ईमान का न होना ज़ाहिरी आंखों को अन्धा नहीं बनाता है बल्कि उन दिलों को अंधा बना देता है जो सीनों में हैं। लालच और ख़ुशामद के ज़रिए दुनिया हासिल करने की मिसाल ऐसी है जैसे सोना घास के वज़न पर लिया जाए। घास थोड़ी देर में जल कर राख हो जाएगी और सोना भी हाथ से गया।

अगर तुम्हारा ईमान नाक़िस है तो लोगों से मेलजोल रख कर कुछ दुनिया ज़रूर ज़रूर हासिल करो, इस का नाम मईशत है यानी ज़िन्दगी के गुज़ारने का सामान है मगर जिस क़द्र जल्द हो सके अपनी मईशत की ऐसी इसलाह कर लो कि तुम आला दर्जे के मक़सदों पर आ जाओ। जब तुम्हारा ईमान क़वी हो जाएगा तो अब तुम तवक्कुल पैदा कर लो और असबाब से बेपरवाह हो जाओ। दुनिया वालों से मेल जोल व सुहबत कम होते होते आख़िर तुम में वह रूहानी यक़ीन पैदा हो जाना चाहिए कि गोया अब तुम मलकुल मौत को रूह हवाले कर देने के लिए तैयार ख़ड़े हो।

इस ज़िन्दगी के समुन्द्र में क़ज़ा व क़द्र की मौजें जहाँ तुम्हें ले जायें उसी तरफ़ तुम्हारी तवज्जो भी होनी चाहिए कि गोया अब असबाब के ख़्यालात तुम्हें काटने नहीं आयेंगे। मईशते दुनियवी की फ़िक्र तुम्हारी रूह में ज़र्रा बराबर भी बेचैनी पैदा न कर सकेगी।

ऐ शख़्स ये तुझको मेरी नसीहत है इस पर अमल तेरी रूह को आला दर्जे की बलन्दी पर पहुँचाने का ज़िम्मेदार है

अगर तू इस पर पूरे तौर पर अमल नहीं कर सकता तो थोड़ा ही सही। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "लोगो जितना भी तुमसे हो सके दुनिया की फ़िक्रों से नजात हासिल करो"

ऐ ग़ुलाम जिस क़द्र जल्द दुनिया के ग़म से छुटकारा हासिल कर सकता है कर ले। अपने दिल को उस बेइन्तिहा रहमत के एक कनारे से बांध ले जो तेरे दिल की नाव को हक़ीक़ी इत्मिनान के कनारे पर पहुँचा दे। अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है, हर चीज़ का आलिम है उसके हाथ में सब कुछ है उससे मांगो तो पहले अपने दिल की तहारत मांगो, ईमान व मारिफ़त मांगो, इल्म मांगो और दिल में शाने बेनियाज़ी मांगो, यक़ीन की रौशनी मांगो, अल्लाह तआला ही से महब्बत व उनसियत मांगो। जब ये चीज़ें मिल जायें तो सब कुछ मिल सकता है, ग़ैर के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत ही नहीं तुम्हारा हक़ीक़ी मामला अल्लाह तआला से है, मग़रूर व मख़लूक़ के दर पर पेशानी रगड़ने की ज़रूरत नहीं।

ऐ ग़ुलाम अगर तूने सिर्फ़ ज़बान से कलिमए शहादत अदा कर लिया है और दिल ने अमल के ज़रिए उसका असर अपने अन्दर नहीं लिया है तो समझ ले कि तू एक क़दम भी ख़ुदा की तरफ़ नहीं बढ़ा है। असली रवानगी तो दिल की रफ़्तार पर मौक़ूफ़ है, और असली नज़दीकी तो रूह की नज़दीकी का नाम है, अमल वह है जिसके अन्दर रूह यानी इख़्लास हो। यह इख़्लास ज़ाहिरी आज़ा और शरीअत के शरीअत के हुदूद की हिफ़ाज़त किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता, यही उसकी कसौटी है जो अल्लाह तआला के नेक बन्दों की ख़िदमत किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता जो अपनी ज़ाती ज़िन्दगी को बुज़ुर्गों की ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ अपना अलग मेआर बनाए तो यह झूटी मेआर है।

लोगों को दिखाने की ख़ातिर 'अमल' अमल नहीं है, आमाल तो तन्हाई में होते हैं लोगों के सामने तो सिर्फ़ वह

फ़राइज़ होते हैं जिनका ज़ाहिर करना ज़रूरी है। आमाल की बुनयाद तौहीद व इख़्लास है अगर तौहीद व इख़्लास नहीं तो आमाल की इमारत खोखली बुनयाद पर है, वह जल्द ज़मीन पर ढेर बन जाएगी। पहले इस बुनयाद को मज़बूत कर लो तो फिर अमल की बलन्द व बाला इमारत भी बनाना ठीक होगा। ख़ुदा ने चाहा तो यह कभी नहीं गिरेगी, उसकी .कुव्वत उसकी बुनयाद का राज़ है। तौहीद ही की वजह से तुम्हारा अमल सच्चाई के आसमान पर चाँद बन कर चमकने लगेगा और सूरज की तरह रोशनी देगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म की तक़रीर बमक़ाम मदरसा मामूरा में 19 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोज़े सहशम्बा (मंगल)

रियाकार (दिखावे की नेकियाँ करने वाले) का ज़ाहिर तो साफ़ मगर दिल गन्दा होता है। वह शरई मुबाह चीज़ों से भी नफ़रत करता है, कस्बे हलाल से परहेज़ करता है, हाँ मज़हब को अपनी रोटी का ज़रिया बनाता है, उसकी हक़ीक़त अवाम की नज़रों से पोशीदा (छुपी हुई) होती है मगर ख़ास लोग उसको बराबर देखते रहते हैं, उसका सारा तक़्वा (परहेज़गारी) व फ़रमाबरदारी बनावटी होती है, उसका बातिन (यानी दिल के अन्दर की बात) ख़राब होता है।

अफ़सोसनाक होगा अगर तुम न समझो कि अल्लाह तआला की इताअत दिल से होती है नाकि जिस्म से। इबादत की यह सारी चीज़ें दिल से, बातिन से और माफ़ी से तअल्लुक़ रखती हैं तू इस ज़ाहिरी लिबासों की दौलत से अलग हो जा ताकि बातिनी नेमत के बेहतरीन लिबास से सरफ़राज़ हो जाए। इस मक्र के लिबास को उतार दे ताकि अल्लाह तआला तुझे हक़ीक़त का लिबास पहना दे और काहिली के लिबास को उतार दे यहाँ तक कि ख़ुशामद और निफ़ाक़ (दिल में कुछ

ज़ाहिर कुछ) के लिबास को भी उतार कर फेंक दे। इन ख़्वाहिशों, .गुरूरों और उज्ब (.गुरूर की एक क़िस्म) और निफ़ाक़ के चमकीले पोशाक को उतार कर जला दे ताकि तेरे लिए हक़ीक़ी महब्बत का उम्दा लिबास हक़ीक़ी अज़मत का जन्नती लिबास अल्लाह तआला की तरफ़ से इनाम में मिल जाए।

ग़र्ज़ कि तू दुनिया का लिबास उतार दे और आख़िरत का लिबास पहन ले। अपनी ताक़त अपने वुजूद अपनी .क़ुव्वत या मख़लूक़ की .क़ुव्वतों पर घमंड छोड़ दे। इस घमंड को छोड़कर उसके दरबार में आ जा तो तुझे उसकी बेशुमार मेहरबानियाँ अपनी आग़ोश में ले लेंगी। उसकी बेइन्तिहा रह़मत तुझे अपने दामने करम में पनाह देगी बल्कि तू अपने वुजूद से भी हटकर अपने आक़ा के सामने आ जा और जब तू उसका हो जाएगा तो वह तेरा हो जाएगा। उसकी वसीअ और बेशुमार रह़मत व इनायत के साए में तेरी आरामगाह होगी। तेरे नफ़्से शैतान के लिए वही दवा है, तेरी शिकस्तगी (ज़ख़्म) के लिए वही मरहम है, तेरे हर दर्द का इलाज उसी के पास है, तेरे हर दुख को वही दूर कर सकता है, तू अपने को उसके लिए तोड़ेगा तो वही उसे जल्द जोड़ेगा, तू उसके लिए कट जाएगा यानी .क़ुर्बान हो जाएगा तो आख़िरकार वही तुझसे जुड़ जाएगा।

अब इससे बढ़ कर तेरे लिए कौन सी दौलत चाहिए जब वह तेरे टूटे को जोड़ेगा तेरे दर्द का ख़ुद मुदावा (दर्द को ठीक करने वाला) होगा तो सारी दुनिया मिल कर भी तुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगी अगर वह तेरा दोस्त हो जाएगा तो दुनिया की सारी बलाओं के मुक़ाबले में भी तेरे लिए पहरा रहेगा।

जो तौहीद को ज़िन्दा करके कमज़ोर मख़लूक़ की नारवा महब्बत को फ़ना कर देता है जो ज़ुहद को ज़िन्दा करके दुनिया के लालच को मुर्दा करता है, अपने ख़ालिक़ की रग़बत (चाहत) को अपने दिल में ज़िन्दा करके अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ को ठुकरा देता है तो वही है जो सलाहियत

(क़ाबिलियत) की चोटी पर पहुँच गया, अपनी फ़लाह व कामरानी की ज़मानत हासिल कर ली, दीन व दुनिया की सआदतों को हासिल करने का राज़ उसने मालूम कर लिया। इसलिए ज़रूरी है कि तुम मौत आने से पहले यह मौत अपने ऊपर तारी कर लो जो कि नफ़्स की मौत है और हवस की मौत है तुम्हारे शैतान लईन की मौत है। यह ख़ास मौत उस मौत के इलावा है जिसे आम बोलचाल में मौत कहते हैं आम मौत है यानी नफ़्स को मार देना एक ख़ास मौत है जो नेकों के लिए बहुत बड़ी नेमत है।

ऐ क़ौम मेरे कहे को क़बूल कर लो क्यूँकि मैं तुमको ख़ुदा के रास्ते की तरफ़ बुला रहा हूँ, उसकी इताअत की दावत दे रहा हूँ मैं तुमको अपनी ज़ात की तरफ़ नहीं बुला रहा हूँ। मुनाफ़िक़ लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं बल्कि अपनी ज़ात की तरफ़ बुलाता है वह दुनिया का लालची है।

ऐ जाहिल तू बुज़ुर्गों की नसीहत से कान में रूई डाल लेता है क्यूँकि तौहीद के घर में ठहरने से तुझे शर्म आती है हाँ मआज़ अल्लाह तू बुतख़ाना में बैठना चाहता है ताकि तू बुत पर अपनी ज़मीर की आज़ादी को भेंट चढ़ा दे मगर यह तेरे लिए हलाकत का सामान है। इसलिए मेरी हमदर्दाना नसीहत यह है कि तू बुज़ुर्गों की सुहबत इख़्तियार कर, अक़्लमन्द पीर के नक़्शेक़दम पर चल ख़बीस नफ़्स के फंदे से अपने गले को छुड़ा ले। कामिल मुर्शिदों का दामन मज़बूती से थाम ले।

हाँ अगर तुझमें कमाल पैदा हो जाए तो उनसे अलग अपनी एक मुस्तक़िल शान हासिल कर सकता है ताकि दूसरे दिलों के अन्धेरे में अपनी ताबनाकी (रोशनी) से उजाला पैदा करे तो तू इस क़ाबिल बन जा कि दूसरों के क़ल्ब और रूह का भी इलाज कर दे।

अगर ज़ुहद व तक़वा की तारीफ़ें सिर्फ़ ज़बान पर हों और दिल गुनाहों में मुबतला हो तो ऐसी सूरत में इन्सान ज़ाहिरी मुसलमान है मगर बातिन में काफ़िर है? ज़ाहिर में मुवहहिद

(अल्लाह को एक जानने वाला) है मगर बातिन में मुशरिक। मोमिन बातिन की तामीर से शुरूआत करता है तो फिर ज़ाहिर की तामीर करता है यानी पहले वह दिल से इबादत करता है फिर उसकी ज़ाहिरी इबादत या नेकी ज़ाहिर होती है जैसे कोई होशयार मुहन्दिस (बमअनी नक़्शा या बिल्डिंग बनाने वाला) घर की तामीर उम्दगी से करता है तो फिर दरवाज़ा भी अच्छा बनाता है। तम्बीह : इस वाज़ की तफ़सील किसी अच्छे आलिमे दीन से इत्मिनान के साथ समझ लीजिए यहाँ हिन्दी में समझाना दुश्वार है।

सरकारे ग़ौसे आज़म की तक़रीर

बमक़ाम मदरसए बग़दाद

13 रजबुल मुरज्जब हिजरी 545 बरोज़ सहशम्बा

जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम की एक ख़ूबी यह है कि वह उन चीज़ों को छोड़ना सिखाता है जो बेमक़सद और बेमअना हैं --- जिस शख़्स ने अपने अच्छे इस्लाम का सुबूत दिया वह मक़सद वाला काम करता है और ग़ैर मक़सद वाले कामों से दूर होता है क्यूँकि जिन कामों का कोई उसूली मक़सद न हो वह बेकारों और लालचियों के कारोबार हैं। वह शख़्स मौला तआ़ला की ख़ुशी से महरूम है जो ऐसे काम नहीं करता जिनका हुक्म दिया गया है और वह काम करता है जिनका हुक्म नहीं है। यह यक़ीनन महरूमी है बल्कि यह तो मौत है और एक क़िस्म की अपने रब के दर से दूरी है। दुनिया के कामों में मसरूफ़ियत के लिए नियत का ठीक होना शर्त है वर्ना तबाही है, पहले तो तुम दिल की सफ़ाई का काम करो क्यूँकि यह तो फ़र्ज़ है फिर कहीं मअरिफ़त की तरफ़ जाना, अगर तुम जड़ ही खोदो तो भला डालियों से क्या मिलेगा? दिल तो नापाक हो और बदन पाक हो तो क्या फ़ायदा? बदन भी उसी वक़्त पाक होगा जबकि तुम क़ुर्आन व सुन्नत पर अमल करोगे, दिल महफ़ूज़ है तो बदन भी महफ़ूज़ रहेगा।

बर्तन में जो होता है वही निकलता है, दिल में जो तुम्हारे होगा वही बदन से जारी होगा। होशयार! यह अमल उसका नहीं जो मौत का यक़ीन रखता है, यह अमल उसका नहीं जो अल्लाह तआला से मुलाक़ात करने पर ईमान रखता है और क़ियामत के दिन से डरता है। सही क़ल्ब तो वह है जिसके अन्दर तौहीद व तवक्कुल (अल्लाह तआला पर भरोसा) व यक़ीन व तौफ़ीक़ व इल्म व ईमान व क़ुर्बे इलाही की शराब हो और सारी मख़लूक़ से अपने आपको आजिज़ व ज़लील व फ़क़ीर समझे। इसके बावुजूद एक छोटे बच्चे के मुक़ाबिल भी ग़ुरूर न करे। जब कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और ख़ुदा के नाफ़रमानों से मुक़ाबला हो तो शेर की तरह डट जाए मगर रज़ाए इलाही के सामने कटे हुए गोश्त की तरह गिर जाए। नेक और परहेज़गार लोगों के सामने अपने को कमतर और ज़लील समझे। ऐसे ही लोगों की तारीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :- أَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ तर्जमा : काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त आपस में रहमदिल (पारा 26 रुकू 12)

मगर अफ़सोस है तुझ पर ऐ बिदअती ख़ुदा के सिवा किसकी मजाल है कि अपने आपको ख़ुदा और सारे जहान का रब कहे। हमारा रब बात करता है, वह गूंगा नहीं है, उसने मूसा से बातें की थीं। وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا (तर्जमा : और बेशक अल्लाह ने मूसा से गुफ़्तगू की) उसकी बात सुनी जाती है और समझी जाती है। उसने हज़रते मूसा से कहा था يَا مُوْسٰى إِنِّيْ أَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (तर्जमा : ऐ मूसा मैं अल्लाह हूँ सारे जहान का पालने वाला) यानी अल्लाह ने यह बतला दिया कि यह न समझो कि मैं कोई फ़िरिश्ता हूँ या जिन्न हूँ या आदमी हूँ नहीं नहीं मैं सारे जहान का मालिक हूँ गोया अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को झुटलाया जिसने कहा था أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلٰى (तर्जमा : मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ) मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं। ------ इसलिए ख़ुदा ने मूसा को बता दिया कि मैं ख़ुदा हूँ फ़िरऔन हरगिज़ ख़ुदा नहीं है, न ही कोई और ख़ुदा है।

---- हज़रते मूसा अल्लाह तआ़ला की यह सुन रहे थे और उनको बड़ी परेशानी थी क्यूँकि उस वक़्त अन्धेरी रात थी फ़िक्रों का हुजूम था, एक तरफ़ हामिला बीवी बच्चे की पैदाइश के दर्द में मुब्तला है मगर उस तारीकी में ऐ नूर ज़ाहिर हुआ जो अल्लाह तआ़ला ने ज़ाहिर फ़रमाया था। उन्होंने अपनी शरीके हयात यानी बीवी को सामान समेत वहीं ठहरा दिया। यह कहते हुए कि اُمْكُثُوْا اِنِّىْ اٰنَسْتُ نَارًا (तर्जमा : ज़रा ठहरो मुझे आग नज़र आ रही है) मुझे एक रोशनी दिखाई दे रही है वह रोशनी जो मेरे दिल में मेरी रूह में मेरी रूह की गहराई में असर कर रही है, मेरे अन्दर हिदायत की चमक पैदा कर रही है जिसकी वजह से मैं सारी दुनिया से मुस्तग़नी (लापरवाह होने वाला) हो रहा हूँ। यह मेरे लिए विलायत व ख़िलाफ़त का पैग़ाम है इसमें मेरे लिए असली ज़िन्दगी है जिसने मेरी फ़र्ई ज़िन्दगी (यानी दुनियावी ज़िन्दगी) को रुख़सत कर दिया है, उसने मुझे वह हुक्म दिया जिसने मुझे महकूमी से बेपरवाह कर दिया, अब ख़ौफ़ मेरे दिल से रुख़सत हो रहा है, अब यही ख़ौफ़ मेरे दुश्मन (फ़िरऔन) के दिल में घर कर लेगा। हज़रते मूसा ने यह कहा और अपनी बीवी को रब की हिफ़ाज़त में दे कर आगे बढ़ गए, यक़ीनन इसका नतीजा यह हुआ कि रब हीं ने उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। इसी तरह मोमिन जब अल्लाह के क़रीब होना चाहता है और ख़ुदा उसको अपने क़रीब आने की दावत देता है तो वह चौकन्ना हो कर चारों तरफ़ देखने लगता है उसकी ज़ाहिरी नज़रों में ऐसा दिखाई देता है कि हर सम्त बन्द है बस एक सम्त खुली है जो उसके मौला तआ़ला की है। वह मोमिन बन्दा अपने ज़ाहिरी तअल्लुक़ात की शरीके ज़िन्दगी से मुख़ातब होकर कहता है اِنِّىْ اٰنَسْتُ نَارًا (तर्जमा : देखो वह मुझे रोशनी नज़र आ रही है) अब मैं उधर जा रहा हूँ तुम्हारा ख़ुदा हाफ़िज़ अगर है क़िसमत में लौटना तो लौट ही आऊँगा वरना तुम इधर और हम उधर। इस तरह वह दुनिया व माफ़िहा यानी अल्लाह के सिवा जो कुछ दुनिया

में है उसको रुख़सत कर देता है, मसनूआत (बनाई हुई चीज़ों) को छोड़ कर वह सानेअ (यानी बनाने वाले) के दरे फ़ैज़ की तरफ़ लपक जाता है। अब जब वह मिल जाता है तो सब कुछ मिल जाता है। बीवी भी बच्चे भी माल व असबाब भी सब महफ़ूज़ हो जाते हैं। अहवाल की बातें दूर वालों से छुपाई जाती हैं नज़दीक वालों से नहीं छुपाई जाती हैं, दोस्तों से नहीं दुश्मनों से छुपाई जाती है, ख़ास लोगों से नहीं आम लोगों से छुपाई जाती है। यह दिल तो वह है कि जब इसके अन्दर सेहत व सफ़ाई पैदा की जाती है तो चारों तरफ़ से अल्लाह तआ़ला ही की बातें उसके कानों में आने लगती हैं, हर नबी हर वली हर सिद्दीक़ की आवाज़ें उसे सुनाई देने लगती हैं, उस वक़्त वह अल्लाह तआ़ला से क़रीब हो जाता है उस बन्दे के हक़ में अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी ज़िन्दगी है अल्लाह तआ़ला से दूरी मौत है, मुनाजात में उस मोमिन बन्दे को सुकून मिलता है और अल्लाह तआ़ला की याद में उस मोमिन बन्दे को ख़ुशी हासिल होती है, दुनिया उसके हाथ से निकल जाए उसकी बला से भूक प्यास और दुनिया की सख़्तियाँ अपनी डरावनी शक्ल उसके आगे पेश करें वह ख़ौफ़ज़दा नहीं होता है वह मुरीद (मुराद को पहुँचने वाला) है उसकी ख़ुशी की पूंजी फ़रमाबरदारी है वह आरिफ़ है और उस मोमिन बन्दे की मुराद उसके क़रीब है यानी अल्लाह तआ़ला की ज़ात उससे क़रीब है। एक मोमिन बन्दे को इससे बढ़कर और क्या चाहिए।

मगर तू ऐ बनावटी शैख़ क्या ये नेमत तुझे हासिल है क्या दिन भर रोज़ा रख लेने रात भर नमाज़ें पढ़ लेने सूफ़ियों का लिबास पहन लेने से तुझे यह दर्जा हासिल होगा? यह दर्जा तुझे कहाँ से हासिल होगा जबकि तूने अपने नफ़्स व हवस ही को नहीं ठुकराया अपनी तबीयत और आदत को तूने लगाम नहीं दी।

जहालत व मख़लूक़ की सोहबत ही में रहा, नहीं यह नेमत तेरे लिए नहीं है लेकिन अगर लेना है तो तौबा कर ले, ख़ुलूस व सिद्क़ को दावत दे तुझे भी रुतबा मिल जाएगा,

क़ुर्ब व विसाल की दौलत से तू भी मालामाल हो जाएगा यानी अल्लाह तआला की नज़दीकी तुझे हासिल होगी, हिम्मत बलन्द कर ले बलन्दी तेरा इन्तेज़ार कर रही है, इस्लाम पैदा कर ले सलामती तेरी आग़ोश में है, तू अल्लाह से राज़ी हो जा वह भी तुझसे राज़ी हो जाएगा, काम शुरू करना बस तेरा काम है उस काम को पूरा कर देना अल्लाह तआला का काम है।

ऐ अल्लाह! तू दुनिया व आख़िरत में हमारा कारसाज़ हो जा, हम को अपनी मख़लूक़ के हाथ में न दे, अपने हाथ में रख ले, ख़ुद हमको हमारे हाथ से बचा।

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है अल्लाह तआला जिब्रील अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है फ़लाँ आदमी को आराम से सुला दो फ़लाँ शख़्स को उठा दो किसको? उसको जिसने महब्बत का दावा किया है अब मेरा उससे मुक़ाबला है मैं उसको आज़माऊँगा उसको चैन नहीं लेने दूंगा। सुला दो उसको जिसने मेरी महब्बत का सुबूत दे दिया उसने पूरी मेहनत उठाई अब उसके दिल में मेरे सिवा किसी का वुजूद नहीं उसकी दोस्ती मुझसे मुत्तहिद (मिल गई है) हो गई वह अपनी वफ़ादारी में पक्का निकला अब वह मेरे घर में मेहमान है मेरा काम है उसकी ख़ातिर करना, मेहमान को कोई तकलीफ़ नहीं दी जाती है वह मेरी मेहरबानी के गहवारे में सोएगा, मेरे फ़ज़्ल के दसतरख़्वान पर से नमतें खाएगा मेरे उन्स (महब्बत) के क़रीब होगा, ग़ैर की नज़रों से उसको छुपाया जाएगा वह सच्चा महबूब जिसने महब्बत को सच कर दिखाया उसकी तकलीफ़ दूर होगी।

दुश्मन की आवाज़ से मुझे नफ़रत है दोस्त की आवाज़ मेरे लिए नग़मए शीरीं है कौन है यह दोस्त जिसने दिल को साफ़ कर लिया अल्लाह के सिवा अपने दिल से हर एक को आज़ाद कर दिया यानी सिर्फ़ अल्लाह का होकर रहा और दुनिया से आज़ाद हो गया। उसी से तौहीद व तवक्कुल व मअरिफ़त में कमाल पैदा होता है और वही दोस्त हो जाता है

उसी को शिफ़ा हासिल होती है हर मर्ज़ से। कोई शख़्स जो दुनिया के किसी बादशाह का दोस्त बन गया तो क्या क्या तकलीफ़ें उसके मिलने के लिए उठाता है। उसके लिए घर छोड़ कर निकल जाएगा ताकि उसके शहर को पहुँचे, दिन को दिन रात को रात नहीं समझेगा और चलता ही रहेगा यहाँ तक कि उसके घर पहुँच जाएगा। उसके बग़ैर उसे खाना पीना अच्छा न लगे। इधर बादशाह को भी उसके हाल से ख़बर मिलती है कि फ़लाँ शख़्स दूर से यहाँ आ रहा है तो वह क्या करता है? अपने ख़ादिमों को उसके इस्तिक़बाल के लिए भेजता है, ख़ुशआमदीद कहते हुए उसे महल में लाया जाता है उस शख़्स को बादशाह बैठने का हुक्म देता है फिर बादशाह उससे मीठी मीठी बातें करता है मिज़ाज पूछता है, बादशाह हसीन व जमील लौंडियाँ उसके निकाह में देता है मुल्क का एक हिस्सा इनाम में देता है। अब क्या उसका ख़ौफ़ या थकान बाक़ी रहेगी, क्या अपने वतन को लौटने की धुन रहेगी ऐसे नेमत वाले की जुदाई वह शख़्स कैसे चाहेगा। उस बादशाह के पास तो वह शख़्स अब मकीन व अमीन का रुतबा हासिल कर चुका है, वैसे ही वह तुम्हारा दिल है जो आशिक़ का रुतबा हासिल कर चुका है और ख़ुदा को तलब करते हुए आगे बढ़ रहा है। जब वह बन्दा अल्लाह तआला से विसाल हासिल कर लेता है तो उस बन्दे को इतना मिल जाता है कि अब उसे अपने देश में वापस लौटने की कोई तमन्ना और फ़िक्र नहीं रहती। ------

आशिक़ का इस रुतबे तक पहुँचना फ़र्ज़ की अदायगी के बग़ैर मुमकिन नहीं न हराम से परहेज़ के बिना मुमकिन है बल्कि आशिक़ के लिए तो उन मुबाहात को भी तर्क करना होगा जो हवा व हवस के दाएरे में हैं और अपने वुजूद से भी दस्तबरदार होना पड़ेगा। गर्ज़ यह कि ज़ुहद व तक़वा इख़्तियार करना होगा, अल्लाह के सिवा सब कुछ तर्क करना होगा, नफ़्स की मुख़ालफ़त करनी होगी शैतान से मुक़ाबला कर के इस इम्तेहान में कामयाब होना होगा और मख़लूक़ की महब्बत से दिल को

ख़ाली करना होगा। उस दर्जे पर पहुँच जाना होगा जहाँ अच्छाई और बुराई एक हो जायें यानी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई करे या बुराई मगर तुम्हें कोई ग़म और फ़िक्र बिल्कुल न हो। मख़लूक़ के मना और अता एक हो जायें सोना और पत्थर एक ही नज़र से देखा जाए जिसका दिल सही हो गया उसके लिए हीरा और कंकर एक ही हैं। दुनिया की ख़ुशनसीबी और बदनसीबी उसके पास एक ही लाइन पर हैं जिसको यह कमाल हासिल हो गया उसका दुश्मन जेर हो गया दुनिया और दुनिया वाले उसकी नज़र में हेच हो गए फिर आख़िरत और आख़िरत वाले उस आशिक़ की नज़रों में अच्छा लगने लगें मगर उसके बाद तो वह दर्जा आता है कि आख़िरत भी उसकी नज़र में हेच हो जाती है। उसके दिल में सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह रह जाता है। इस तरह वह मख़लूक़ की सफ़ों को चीरता हुआ अपने मौला तक पहुँच जाता है और ये सफ़ें उसे रास्ता भी दे देती हैं, वह उसकी सिद्क़ की आग और बातिन की हैबत से भाग जाते हैं जिसके अन्दर यह बात जम गई तो फिर कोई उसकी तरक्क़ी को रोक नहीं सकता उसका झंडा नीचा नहीं हो सकता उसकी फ़ौज शिकस्त नहीं खा सकती।

वह आशिक़ एक ऐसा परिन्दा है जो हमेशा चहचहाता रहेगा वह आशिक़ एक शमशीर का मालिक है जो कुन्द नहीं होगी, उसके इख़्लास के क़दम थकने का नाम नहीं लेते, उसका मक़सद अटल है, उसके महबूब यानी अल्लाह तआ़ला के दरवाज़े पर कोई उसको कोई रोकने वाला नहीं, वहाँ कोई रुकावट उस आशिक़ के लिए नहीं दरवाज़े ख़ुद ब ख़ुद उस आशिक़ के लिए खुल जाते हैं। इस तरह अल्लाह तआ़ला और उस आशिक़ के दरमियान कोई चीज़ आड़ नहीं बन सकती है न बनेगी। अल्लाह तआ़ला उसको अपनी महब्बत की गोद में सुलाएगा और वहीं उसको आराम मिलेगा। वह बन्दा अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम का मेहमान है, ख़ुदा के उस बन्दे के आराम के लिए खाने पीने की वह नेमतें हाज़िर हैं कि

لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ

तर्जमा : जिन नेमतों को न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना न उनका तसव्वुर किसी इन्सानी दिल पर आया।

ऐसा बन्दा फिर मख़लूक़ की तरफ़ लौटेगा तो अल्लाह तआला के बन्दों को सीधा रास्ता बताने की ग़रज़ से ताकि दूसरे को भी उस दर तक ले आ सके और उस दरबार का क़ासिद बन कर उनकी रहनुमाई का फ़र्ज़ अन्जाम दे।

इस तरह आलमे मलकूत यानी फ़िरिश्तों का आलम में ख़ुदा के उस ख़ास बन्दे का डंका बज जाता है। उसके दिल की हुकूमत के साए में सारा जहान आ जाता है मगर ऐ बनावटी तू विलायत की झूटी शेख़ी बघार रहा है अभी तो तेरे दिल पर नफ़्स छाया हुआ है मख़लूक़ छाई हुई है दुनिया का तुझ पर क़ब्ज़ा है और तुझे अल्लाह की याद से ज़्या हैं दुनिया की फ़िक्रें तुझे घेरे है। अभी तू उन बुज़ुर्गों की सफ़ में नहीं आ सकता, अगर वाक़ई तेरा दिल उस रुत्बे पर आना चाहता है तो आ मगर पहले दिल को पाक व साफ़ कर ले। अल्लाह के सिवा सब को अपने दिल व दिमाग़ से निकाल दे रब के हुक्म के सामने अपनी गर्दन झुका दे तक़दीरे इलाही के आगे हथियार रख दे उसके बाद आ जा अब तू मुझसे मुँह लगाने के क़ाबिल है तुझे मालूम हो जाएगा कि वहाँ क्या बात है जब तू ऐसा करेगा तो तेरे मन की मुराद मिल जाएगी इससे पहले की तेरी सब बातें बकवास हैं।

मगर अफ़सोस तेरी तो यह हालत है कि ज़रा ज़रा सी बातें तुझे नराज़ कर देती हैं तू आपे से बाहर हो जाता है तुझको अपने आप पर क़ाबू नहीं रहता। एक लुक़मा तेरा कम हो जाए एक पैसा तेरा गुम हो जाए तेरी झूटी इज़्ज़त में ज़रा सा धब्बा आ जाए तो तेरे होश ठिकाने नहीं रहते, गुस्से से तेरे मुँह में झाग आने लगते हैं कभी बीवी पर हाथ चलाने लगता है कभी बेटे पर, कभी तू मज़हब को बुरा कहने लगता

है (अल्लाह की पनाह) तो कभी बानीए मज़हब पर तोहमत लगाने लगता है --- अगर तुझे होश होता और तेरे हवास दुरुस्त होते तो क्या ऐसे पागलपन की हरकतें करता नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि तू तो अल्लाह तआला के आगे अपने को गुमसुम पाता अल्लाह तआला के कामों को अपने हक़ में नेमत समझता कोई झगड़ा न करता। बजाए मोमिन होने के काफ़िर न बनो ताकि शुक्रगुज़ार हो नाराज़ होने की जगह अल्लाह तआला के हुक्म पर राज़ी हो, और अल्लाह तआला की बारगाह में तेरे लबों आह व .फ़ुग़ाँ की ख़ामोशी की मोहर होनी चाहिए तुझे तो कहा गया है कि اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبۡدَهٗ (तर्जमा : क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है) ऐ जल्दबाज़ सब्र कर तुझे वह मिलेगा कि तू हैरान रह जाएगा तू क्या जानता है अल्लाह को अगर जानता होता तो यूँ गिले शिकवे न करता ---- अगर अल्लाह तआला को जानता होता तो उसके सामने तू गूंगा बहरा बन जाता --- तड़प तड़प के मांगना तो अलग बात है मांगता ही नहीं और मांगने की तुझे .ज़रुरत क्या है तुझे तो बस सब्र करना चाहिए और होश में रहना चाहिए क्यूँकि अल्लाह तआला का कोई काम हिकमत और मसलेहत से ख़ाली नहीं वह तो तुझे तपा तपा कर देख रहा है कि तू ख़रा है भी या नहीं वह देख रहा है कि तुझे उसके वुजूद का उसकी नज़रों का यक़ीन है भी या नहीं तुझे मालूम नहीं कि मज़दूर अगर बादशाह के घर में काम कर रहा है तो उसका काम करके मज़दूरी मांगना बड़ी बेवक़ूफ़ी है बल्कि अगर ऐसा करेगा तो हो सकता है कि महल से बाहर कर दिया जाए क्यूंकि उसे मांगने की ज़रूरत ही क्या है बादशाह को ख़ुद ही ख़्याल है। मोमिन का ईमान जभी कामिल होता है जबकि मोमिन के दिल में लालच की आग बुझ जाए मख़लूक़ से ख़ौफ़ और उम्मीद ख़त्म हो जाए उसके लिए हमेशा की फ़िक्र और उसूल व .फ़ुरुअ पर नज़र रखने की ज़रूरत है।

अम्बियाए किराम और नेक लोगों के हालात मालूम करने से मालूम होगा कि ख़ुदाए तआला ने किस तरह अपने ख़ास बन्दों को दुश्मनों के चंगुल से छुटकारा दिया। किस तरह ग़ैबी मदद फ़रमा कर अपने प्यारों की ज़िन्दगी को संवार दिया सही ग़ौर व फ़िक्र से तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) भी सही होता है और दुनिया दिल से निकल जाती है। जिन्न व इन्सान और फ़िरिश्ते सब भूल जाते हैं सिर्फ़ ख़ुदा की याद दिल में आ जाती है और क़ल्ब ऐसा बन जाता है गोया कि उसके सिवा कोई मख़लूक ही नहीं गोया सारी मख़लूक में से वही इताअत-पर मामूर है उसी पर अल्लाह तआला के इनामात हुए हैं और सारी तकलीफ़ों का बोझ उसी की गर्दन पर है। मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तकलीफ़ों और पहाड़ों जैसी मुसीबतों को ख़ुदावन्द .क़ुद्दूस का पैग़ाम समझ कर वह इन्सान उठा लेता है! इस तरह अपनी सच्ची बन्दगी का सुबूत देता है मख़लूक़ का बार उठा लेता है ख़ुदा उसका बार उठा लेता है। वह इन्सान मख़लूक़ का तबीब बनता है ख़ुदाए तआला उस इन्सान का तबीब बनता है। वह इन्सान मख़लूक़ को ख़ुदा के दर तक पहुँचाने के लिए रहबर बन जाता है। वह इन्सान ऐसा सूरज बन जाता है जिससे उस राह के सब सितारे रौशनी हासिल करते हैं। वह इन्सान मख़लूक़ का आबो दाना हो जाता है यानी इन्सान अपनी ज़रूरियात उस बन्दए ख़ुदा से हासिल करते हैं और अल्लाह तआला के उस ख़ास बन्दे से अलग नहीं होते उस ख़ास बन्दे की सारी तवज्जो मख़लूक़ के फ़ायदे पर ख़र्च होती है। वह ख़ास बन्दा अपनी ज़ात को भूला देता है गोया उसकी ज़ात ही नहीं। इस राह में वह खाना पीना भूल जाता है यहाँ तक कि वह अपने नफ़्स को भूल जाता है उसकी सारी कोशिश मख़लूक़ को नफ़ा पहुँचाने के लिए होती है उसने अपनी ज़ात को क़ज़ाए इलाही के हाथों सौंप दिया और अपनी ज़ात से अलग थलग हो गया।

यह है तारीफ़ उस क़ाएद (रहनुमा) की जो दरे हक़ तक मख़लूक़ को ले आने का फ़र्ज़ अन्जाम देता है मगर तू ऐ

लालची अल्लाह से नावाक़िफ़ उसके रसूलों से नावाक़िफ़, उसके वलियों के मरतबों को भूला हुआ मख़लूक़ की हक़ीक़त से बेख़बर और इस पर नेक होने का दावेदार है। हालांकि दिल में दुनिया भर की लालच का अम्बार लगा हुआ है तेरा यह ज़ुहद (नेकी) लंगड़ा है उसके पांव नहीं है। तुझे शौक़ तो सारी दुनिया का है या मख़लूक़ का है तुझे रब से मिलने का शौक़ ही कब है। थोड़ी देर मेरे पास अच्छे ख़्याल व अदब के साथ ठहर तो सही तो मैं बतला दूँ तुझे कि रब का रास्ता कौन सा है। उतार फेंक यह शेख़ी का लिबास। वह लिबास पहन जिस में शान न नज़र आए। ज़लील बन तो इज़्ज़त मिलेगी नीचे उतर तो तू ऊपर किया जाएगा जिस हालत में कि तू है वह तो सरापा हवस है। इस तरह तो अल्लाह तआ़ला की नज़र ही नहीं पड़ती। यह बलन्द रुतबा सिर्फ़ दुनिया में डूबने से नहीं मिल सकता इसीलिए तो रूहानी आमाल की ज़रूरत है फिर कहीं जिस्म के काम की ज़रूरत पड़ती है।

हमारे नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं ज़ुहद यहाँ है तक़्वा यहाँ है इख़लास यहाँ है। (यह अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया)

जो कामयाबी चाहता है उसको मशाइख़ के क़दमों तले ख़ाक बनना चाहिए मगर कौन से मशाइख़ जो तारिके दुनिया और मख़लूक़ को छोड़ने वाला हो जिन्होंने अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक सारी कायनात को अलविदा कह दिया हो कौन हैं जिन्होंने अपनी ज़ात और अपने वुजूद को भी अलविदा कह दिया हो। अब हर हाल में उनका वुजूद अल्लाह तआ़ला के साथ है जो शख़्स रब को तलब करता है और जो अपनी ज़ात का भी तालिब है वह दो टकराने वाली चीज़ों को तलब करता है जो सरासर बेवक़ूफ़ी है।

बनावटी ज़ाहिद अकसर व बेशतर तो वह हैं जो मख़लूक़ के पुजारी हैं उन्हें मुशरिक कहना ठीक है। असबाब पर भरोसा करना मख़लूक़ पर सारा एतिमाद रखना क्या है? शिर्क ही तो

है यही तो ख़ुदा के ग़ज़ब का निशाना बनाता है मुसब्बेबुल असबाब यानी अल्लाह तआला पर तुम्हारी नज़र नहीं जो इन सारे असबाब की चोटी अपने क़ब्ज़े में रखता है और उसका ख़ालिक़ है जो किताब व सुन्नत को मानते हैं उनका एतिक़ाद तो यह है कि तलवार भी ख़ुद से काटने वाली नहीं है आग भी ख़ुद से जलाने वाली नहीं बल्कि ख़ुदा ने यह सिफ़त उसके अन्दर रखी है खाना पेट नहीं भरता बल्कि ख़ुदा के हुक्म से पेट भरता है पानी प्यास नहीं बुझाता बल्कि ख़ुदा का हुक्म तुम्हारी प्यास बुझाता है। इस तरह सारे असबाब हैं ज़ात व हक़ीक़त सबकी अलग अलग है मगर असली तसर्रुफ़ सबके अन्दर ख़ुदाए तआला का है यह चीज़ें वसीले हैं जो अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं। हक़ीक़त में तसर्रुफ़ फ़रमाने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है फिर तुम्हारा इधर उधर देखना बेकार है किसी दूसरे को हाजतरवा समझना या किसी और को मुल्ज़िम ठहराना बातिल है यानी हर काम अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है। तौहीद इसी का नाम है कि हर चीज़ में उसी को मुख़्तार माना जाए। यह इतनी खुली बात है कि हर अक़्लमन्द इस बात से इत्तेफ़ाक़ किए हुए है। मसल मशहूर है अक़्लमन्द को इशारा काफ़ी है और बेवक़ूफ़ को लाठी से समझाने की ज़रूरत है।

बहरहाल इताअत करो कि इसी में इज़्ज़त है नाफ़रमानी छोड़ो कि इस में ज़िल्लत है नुसरत व मदद वही अल्लाह तआला ही करता है, रुसवा व नामुराद वही करता है

وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط

तर्जमा : और (अल्लाह) जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे -- पारा 3 रुकू ।।) --- वह .कुर्ब अता करता है तो इज़्ज़त होती है दूर करता है तो ज़िल्लत हो जाती है।

नोट : हुज़ूर ग़ौसे पाक की तालीमात और तक़रीरों को किसी अच्छे आलिम से समझ लें। हिन्दीं वालों को समझाना बड़ा मुश्किल है।

1- वअज़ मोर्रिख़ा 3 शव्वाल 545हि०

नज़ूले तक़्दीर के वक़्त हक़ तआला शानह पर एत्राज़ करना मौत है दीन की, मौत है तोहीद की, मौत है तवक्कुल व इख़्लास की, ईमान व अलक़ल्ब लफ़्ज़ "क्यों" और "किस तरह" को नहीं जानता। वो नहीं जानता के "बल्के" क्या है। उसका क़ोल तो "हाँ" है (के हुक्म तक़्दीरी की मुवाफ़्क़त करता है और चूं व चरा के साथ राय ज़नी नहीं करता) नफ़्स की आदत ही है के मुख़ालफ़त व तज़ाअ करे। पस जो शख़्स उसकी दुरूस्ती चाहे वो उसको इतना मुजाहेदह में डाले के उसके शर से बे ख़त्र बन जाए। नफ़्स तो शर ही शर है मगर जब मुजाहेदे में पड़ता और मुतमईन्ना बन जाता है तो ख़ैर ही ख़ैर हो जाता है औ तमाम ताक़तों को बजा लाने और मअसीयतों के छोड़ देने में मुवाफ़्क़त करने लगता है पस उस वक़्त इर्शाद होता है के "ऐ इतमिनान वाले नफ़्स! लौट अपने रब की तरफ के तू उससे खुश और वो तुझ से खुश।" अब उसका जोश भी फसीह और उसका शर भी उससे ज़ायल हो जाता है और मख़्लूक़ात में से किसी शै के साथ भी वो लगाओ नहीं रखता। और उसका नसब अपने बाप इब्राहीम (अ०स०) के साथ सही बन जाता है क्योंके हज़रत इब्राहीम अलेहिस्सलाम अपने नफ़्स से बाहर निकल गए और बिला ख़्वाहिश नफ़्स बाक़ी रह गए। और आपका क़ल्ब साहिबे सकून था (नारे नमरूदी में गिरने के वक़्त) आपके पास तरह तरह की मख़्लूक़ात आई और उन्होंने आपकी मदद करने के लिए अपने अपने नफ़्सों को पेश किया। और आप फरमा रहे थे के मुझे तुम्हारी मदद दरकार नहीं। वो मेरे हाल से वाक़िफ़ है और इसलिए मुझे सवाल की भी हाजत नहीं।" जब शाने तसलीम व तवक्कुल सही हुई तो आग से कह दिया गया के हो जा ठंडी और सलामती

वाली इब्राहीम पर। जो शख़्स हक़ तआला के साथ उसकी क़द्र पर राज़ी बन कर सब्र इख़्तियार करता है उसके लिए दुनिया में खुदा की बेशुमार मदद है।

आख़िरत में बेशुमार नअेमत। अल्लाह तआला फरमाता है के सब्र करने वालों को उनका पूरा अज्र बेशुबार दिया जाएगा। अल्लाह पाक से कोई चीज़ पौशीदा नहीं है उसकी नज़र के सामने से जो कुछ भी बर्दाश्त करने वाले उसकी वजह से बर्दाश्त करते हैं। उसके साथ एक साअत के लिए सब्र करो तो बरसहा बरस उसके लुत्फ़ो इनआम को देखते रहोगे। एक साअत का सब्र ही तो शुजाअत है बेशक अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है। मदद करने और कामयाब बनाने में उसके साथ बाइसतक़बाल रहो और उसके लिए बेदार हो जाओ और उससे ग़ाफिल मत होओ अपने बेदार होने को मौत के बाद के लिए ना छोड़ो के उस वक़्त बेदार होना तुम को मुफीद ना होगा। उसके लिए बेदार बनो, उससे मिलने से क़ब्ल बेदार बनो। अपने इख़्तियारी बेदार होने से क़ब्ल वरना पशेमान होओगे। ऐसे वक़्त के पशेमानी तुम को मुफीद ना होगी और अपने क़लूब की इसलाह कर लो। क्योंके क़लूब ही ऐसी चीज़ हैं के जब वो संवर जाते हैं, तो सारे हालात संवर जाते हैं। और इसी लिए जनाब रसूल सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के इब्ने आदम में एक गोश्त का टुकड़ा है के जब वो संवर जाता है तो उसकी वजह से सारा बदन संवर जाता है और जब वही बिगड़ जाता है तो सारा बदन बिगड़ जाता है और वो क़ल्ब है। क़ल्ब का संवरना, परहेज़गारी, हक़ तआला पर तवक्कुल उसकी तोहीद और आमाल में इख़्लास पैदा करने से हैं और उसका बिगड़ना उन ख़सलतों के मअदूम होने से क़ल्ब गोया परिन्दा है। बदन के पिंजरे में गोया मोती है। डब्बे में गोया माल है

संदूक़ में पस ऐतबार परिन्दे का है पिंजरे का नहीं है। ऐतबार मोती है डब्बे का नहीं है और माल का है संदूक़ का नहीं है। ऐ मेरे अल्लाह! मेरे आज़ा का अपनी ताअत में और क़ल्ब को अपनी मअरफ़त में मशग़ूल फरमा। और मुद्दत-उल-उम्र सारी रात और सारे दिन इसी में मशग़ूल रख और हम को शामिल फरमा नेकू कार असलाफ के साथ और हमको नसीब फरमा जो उनको नसीब फरमाया था और हमारा हो जा, जैसा के उनका हो गया था।

वअज़ मोरिख़ा 2 ज़ीक़अद 545हि॰

साहबज़ादा! हक़ तआला के लिए तेरी इरादत सही नहीं हुई और ना तू उसका तालिब है क्योंके जो शख़्स दअवा करे हक़ तआला को मतलूब समझने का और तलब करे ग़ैर को तो उसका दअवा बातिल है। तालिबाने दुनिया की कसरत है और तालिबाने आख़िरत की क़िल्लत है और तालिबाने हक़ और उसकी इरादत में सच्चे तो बहुत ही कम हैं के कमयाबी नायाबी में किब्रीयत अहमर जैसे हैं, इस दर्जा शज़ोनादिर हैं के एक आध ही पाया जाता है। वो कुंबों क़बीलों में से एक एक दो दो हैं। वो मअदुन हैं ज़मीन में, बादशाह हैं ज़मीन के। कोतवाल हैं शहरों और बाशिंदों के, उनके तुफेल मख़्लूक़ से बलायें दूर हाती हैं और उन पर बारिशें बरसती हैं। उनकी बर्कत से हक़ तआला आसमानों से पानी बरसाता है उनकी वजह से रोईदगी लाती है। वो अपने इब्तिदाए हाल में भागते फिरते हैं एक पहाड़ की चोटी से दूसरी चोटी पर। एक शहर से दूसरे शहर की तरफ और एक वीराना से दूसरे वीराना की जानिब। जब किसी जगह पर पहचान लिए जाते हैं तो वहाँ से चल देते हैं। सबको अपनी पीठ के पीछे फैंकते, दुनिया की कुंजियाँ अहले दुनिया के हवाले करते और बराबर इसी हालत पर क़ायम रहते हैं यहाँ

तक के उनके गिर्द क़िलअे तामीर कर दिए जाते हैं (के कहीं नहीं जा सकते) नहरें उनके क़लूब की तरफ बहने लगतीं हैं और हक़ तआला की तरफ से लश्कर उनके इर्द गिर्द फैल जाता है। और एक की जुदा हिफाज़त की जाती है। सबका अेज़ाज़ किया जाता है और निगहबानी होती है और उनको मख़्लूक़ पर हाकिम बनाया जाता है। ये सारी बातें आम अक़्लों से बाहर हैं पस उस वक़्त उनको मख़्लूक़ पर तवज्जह करना फर्ज़ बन जाता है वो तबीबों जैसे होते हैं और सारी मख़्लूक़ बीमारों जैसी। तुझ पर अफ़्सोस! दअवे करता है के तू भी उनमें से है पस बता के उनकी कौन सी अलामत तुझ में मौजूद है हक़ तआला के क़ुर्ब और उसके लुत्फ की क्या निशानी है? तू खुदा के नज़दीक किस मर्तबे और किस मुक़ाम में है। मलकूत आला में तेरा नाम और लक़ब क्या है। हर शब को तेरा दरवाज़ा किस हालत पर बन्द किया जाता है? तेरा खाना और पीना मुबाह है या हलाल ख़ालिस? तेरी ख़्वाबगाह दुनिया है या आख़िरत या क़ुर्बे हक़ तआला? तनहाई में तेरा अनीस कौन है? ख़लवत में तेरा हम नशीन कौन है? ऐ दरोग़ गो! तनहाई में तो तेरा अनीस तेरा नफीस और शैतान और ख़्वाहिश और दुनिया के तफक्कुरात हैं और जलवत में शयातीन-उल-अनस हैं जो बदतरीन हम नशीन और फज़ूल बकवास वाले हैं ये बात बकवास और महेज़ दाअवे से नहीं आती। उसमें तेरी गुफ़्तगू महेज़ हवस है जो तुझ को मुफीद नहीं लाज़िम पकड़ सकून और गुमनामी को हक़ तआला के हुज़ूर में और बे अदबी से एहत्राज़, और अगर उसमें तेरा बोलना ज़रूरी हो तो हक़ तआला के ज़िक्र से और अहले अल्लाह के ज़िक्र से बर्कत हासिल करने के लिए होना चाहिए, ना इस तरह के तू उसका मुद्दई बन जाए अपने ज़ाहिर से हालाँके तेरा क़ल्ब उससे

खाली है। हर ज़ाहिर के बातिन उसके मवाफिक़ ना हो हज़ियान है। क्या तूने जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का इर्शाद नहीं सुना के जो शख़्स (ग़ीबत करके) दिन भर लोगों के गोश्त खाता रहा उसका रोज़ह नहीं हुआ आपने बयान फरमा दिया के खाना पीना और इफ़्तार करने वाली चीज़ों ही के छोड़ने का नाम रोज़ह नहीं है बल्के उसके साथ गुनाहों को छोड़ने का भी इज़ाफा करना चाहिए। पस बचो ग़ीबत से के वो नेकियों को इस तरह खा लेती है जैसे आग सूखी लकड़ियों को खा लेती है। जिस शख़्स की तक़दीर में फलाह है वो उसकी आदत कभी नहीं डालता और जो ग़ीबत में मश्हूर हो जाता है उसकी लोगों में हुर्मत कम हो जाती है और बचो शहेवत के साथ निगाह करने से के वो तुम्हारे क़लूब में मअसीयत का बीज बो देगी और उसका अंजाम दुनिया में अच्छा है ना आख़िरत में। और बचो झूटी क़सम खाने से के वो आबाद शहरों को चटयल बयाबान बना छोड़ती है के माल और दीन दोनों की बर्कत ले जाती है। तुझ पर अफ़्सोस के अपनी तिजारत को झूटी क़सम से रिवाज देता और अपने दीन का ख़सारा उठाता है। अगर तुझे अक़्ल होती तो जानता के अस्ल ख़सारा यही है। तू कहता है के खुदा की क़सम! इस जैसा माल शहर भर में कहीं नहीं और ना किसी के पास मौजूद है। खुदा की क़सम! ये इतने का है और खुदा की क़सम! मुझ को इतने में पड़ा है हालाँके तू अपनी सारी गुफ़्तगू में झूटा है फिर अपने झूट पर गवाही देता और अल्लाह अज़्ज़ोजल की क़सम भी खाता है के "मैं सच्चा हूँ।" अनक़रीब वो वक़्त आएगा के तू अंधा और अपाहज होगा। खुदा तुम पर रहम करे। हक़ तआला के हुज़ूर में बाअदब रहो। जो शख़्स शरीअत के आदाब से अदब ना सीखेगा उसको क़यामत के दिन आग अदब

सिखाएगी। उस मुक़ाम पर किसी ने सवाल किया के फिर जिस शख़्स में ये पाँचों ख़सलतें (दअवा कमाल, ग़ीबत, नज़र बा शहेवत, कज़िब और दरोग़ सलफी) हों उसके रोज़ेह और वज़ू के बातिल होने का हुक्म देना चाहिए? आपने फरमाया के नहीं रोज़ह और वज़ू तो बातिल ना होगा लेकिन ये इर्शाद बतरीक़े वअज़ और तहदीद व तख़्वीफ के है।

3- वअज़ मोर्रिख़ा 12 ज़ीलहज्ज 545हि०

जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है के क़लूब पर भी ज़ंग आ जाता है क़ुरआन पढ़ना, मौत को याद रखना और वअज़ की मजलिसों में हाज़िर होना उनकी सीक़ल है पस अगर साहिबे क़ल्ब ने उस ज़ंग का तदारूक कर लिया जिस तरह के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम ने फरमाया है तो बहेतर है वरना ज़ंग स्याही बन जाता है और क़ल्ब स्याह हो जाता है। नूर से दूर हो जाने के सबब काला पड़ जाता है। दुनिया को मेहबूब समझने और तक़वा के बग़ैर (अंधा बनकर) उस पर गिरने की वजह से। क्योंके दुनिया की मोहब्बत जिसके क़ल्ब में जगह पकड़ जाती है उसका तक़वा जाता रहता है और वो दुनिया जमा करने लगता है ख़्वाह हलाल से हो या हराम से उसके जमा करने में उसकी तमीज़ उठ जाती है और हक़ तआला से और उसके मुलाहेज़ से शर्माना ज़ायल हो जाता है।

साहिबो! अपने नबी(स०अ०स०) के इर्शाद को क़बूल करो और अपने दिलों का ज़ंग उस दवा से जो आप(स०अ०स०) ने तुम पर ज़ाहिर कर दी है साफ कर लो। अगर तुम में से किसी शख़्स को कोई मर्ज़ लाहक़ हो जाए और कोई तबीब उसकी दवा बताए तो जब तक उसका इस्तेमाल नहीं कर लेते ज़िन्दगी दूभर पड़ जाती है

(फिर क़ल्ब के मर्ज़ में पैग़म्बर(स०अ०स०) की बताई हुई दवा के इस्तेमाल से बे परवाई क्यों है) अपनी ख़लवतों और अपनी जलवतों में अपने रब्बे अज़्ज़ोजल का मुराक़्बा रखो। उसको अपना नसब-उल-ऐन बना लो के गोया तुम उसको देख रहे हो क्योंके अगर तुम उसको नहीं देखत तो वो तो तुम को देख रहा है (पस उसका हर वक़्त तुम को देखते रहने का दिल से ध्यान रखना ही मुराक़्बा है। ज़ाकिर वही है जो अपने क़ल्ब से अल्लाह का ज़िक्र करे और जो क़ल्ब से ज़िक्र ना करे वो ज़ाकिर नहीं। ज़बान तो क़ल्ब की ग़ुलाम है और ख़ादिम है (और ऐतबार आक़ा का है ना के ग़ुलाम का) वअज़ के सुनने पर मदावमत कर। क्योंके क़ल्ब वअज़ के सुनने से जब ग़ैर हाज़िर रहने लगता है तो अंधा बन जाता है। तौबा की हक़ीक़त ये है के जुमला अहवाल में हक़ तआला के अम्र की अज़मत मलहूज़ रहे और इसीलिए एक बुज़ुर्ग ने फरमाया है के सारी भलाई दो बातों के अन्दर है यानी हक़ तआला के हुक्म की अज़मत को मलहूज़ रखना और उसकी मख़्लूक़ पर शफ़्क़त करना। हर वो शख़्स जो हक़ तआला के हुक्म की अज़मत ना करे और अल्लाह की मख़्लूक़ पर शफ़्क़त ना करे वो अल्लाह से दूर है।

हक़ तआला ने मूसा अलेहिस्सलाम के पास वही भेजी थी के "रहम करता के मैं तुझ पर रहम करूं। मैं बड़ा रहीम हूँ। जो मेरी मख़्लूक़ पर रहम करता है मैं उस पर रहम करता हूँ। और उसको अपनी जन्नत में दाख़िल कर लेता हूँ।" पस मुबारक हो रहम करने वालों को तुम्हारी तो उम्र इस क़िस्से में बर्बाद हुई के उन्होंने ये खाया और हम ने ये खाया। उन्होंने ये पिया और हम ने ये पिया। उन्होंने ये पहना, और हम ने ये पहना। उन्होंने इतना जमा किया और हम ने इतना जमा किया। जो शख़्स फलाह चाहे उसको

चाहिए के अपने नफ़्स को मोहर्रमात और शुबहात और ख़्वाहिशात से रोके और हक़ तआला के हुक्म को बजा लाए और ममनूआत से बाज़ रहने और उसकी तक़दीर की मवाफ़क़त करने पर जमा रहे अहले अल्लाह हक़ तआला की मईय्यत में सब्र बने रहे। और खुदा से सब्र ना सके। उन्होंने सब्र किया उसके लिए और उसी के मुताल्लिक़। उन्होंने सब्र किया ताके उसकी मईय्यत नसीब हो और तालिब बने ताके उसका कुर्ब उनको हासिल हो जाए। वो अपने नफ़्सों और अपनी ख़्वाहिशों और अपनी तबीअतों के घर से बाहर निकल गए। शरीअत को अपने साथ लिया और अपने रब अज़्ज़ोजल की तरफ चल खड़े हुए। पस उनके सामने आफतें आईं। होल और मसायब भी आए, ग़मूम व हमूम भी आए। भूक प्यास भी आई बरहंगी भी आई, ज़िल्लत व ख़्वारी भी आई मगर उन्होंने किसी की भी परवाह ना की ना अपनी रफ़्तार से बाज़ आए और अपनी तलब से जिस पर मुतवज्जह थे मुतग़ईय्यर हुए उनका रूख़ आगे की जानिब रहा और उनकी चाल सुस्त ना पड़ी। बराबर उनकी यही हालत रहती है यहाँ तक के क़ल्ब और क़ालिब का बक़ा मुतहक्क़िक़ हो जाता है।

साहिबो! हक़ तआला से मिलने के लिए काम करो और उसकी मुलाक़ात से पहले उससे शर्माओ (क्या मुंह लेकर सामने जाएँगे) मोमिन की हया अव्वल हक़ तआला से है उसके बाद उसकी मख़्लूक़ से। अल्बत्ता उस सूरत में जिसको तअल्लुक़ हो दीन से और शरीअत की हदूद की हतक से, तो उस वक़्त उसको हया करना जायज़ नहीं। (बल्के अल्लाह अज़्ज़ोजल के दीन के बारे में शर्म को बालाए ताक़ रख दे और बेबाक बनकर बिला रूरिआयत नसीहत करे) दीन की हदूद को क़ायम करे और हक़ तआला के हुक्म की तामील करे (क्योंके वो हुक्म फरमाता

है के) दीने खुदावंदी के बारे में मुज्रिमों को सज़ा देते वक़्त तुम को शफ़्क़त ना होनी चाहिए। जनाब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम का ताबअे होना जिस शख़्स के लिए सही हो जाता है तो हज़रत(स॰अ॰स॰) उसको अपनी ज़िरह और खूद पहनाते अपनी तलवार उसके गले में डालते, अपने अदब और ख़सायल व आदात से उसको आरास्ता करते और अपनी ख़लअतों में से उसको ख़लअत बख़्शते हैं और उससे निहायत खुश होते हैं के आपकी उम्मत में कैसा होनहार निकला और उस पर अपने परवरदिगार का शुक्रिया अदा फरमाते हैं (के ऐसी सआदतमंद रूहानी औलाद अता फरमाई) फिर इस अपनी उम्मत में अपना नायब उम्मत का राहनुमा और उनको दरवाज़ाऐ खुदावंदी की तरफ बुलाने वाला बना देते हैं। बुलाने वाले और राहनुमा आप ही थे मगर जब आपको हक़ तआला ने उठा लिया तो आपके लिए उम्मत में से वो लोग क़ायम कर दिये जो उनमें आपके जानशीन बनते हैं और वो लाखों बल्के अनगिनत मख़्लूक़ में से एक दो ही हैं। वो मख़्लूक़ को रास्ता बताते हैं। और उनकी ईज़ाओं को बर्दाश्त करके हर वक़्त उनकी ख़ैरख़्वाही में लगे रहते हैं। मुनाफिक़ों और फासिक़ों के मुंह पर हंसते और तरह तरह की तदबीरें करते हैं के किसी तरह उनको इस हालत से छुड़ायें जिसमें वो मशग़ूल हैं और हक़ तआला के दरवाज़े पर उनको ला डालें। और इसी लिए एक बुज़ुर्ग ने फरमाया है के "फासिक़ के मुंह पर नहीं हंसता मगर आरिफ।" यानी आरिफ उसके मुंह पर हंसता और ऐसा ज़हिर करता है गोया उससे वाक़िफ ही नहीं। हालाँके वो आगाह है उसके दीन के घर की वीरानी से और उसके दिल के चहेरे की स्याही से और उसके खोट और तकद्दुर की कसरत से। फासिक़ और मुनाफिक़ तो यूं गुमान करते हैं के हमारा

हाल उससे मख़्फी रहा। और उसने हम को पहचाना नहीं। नहीं नहीं उसकी कोई इज़्ज़त नहीं (जिस के सबब उनका हाल मख़्फी रहे) वो आरिफ से छुप नहीं सकते। आरिफ उनको पहचान लेता है। निगाह और नज़र और बात और हर्कत से। उनको शनाख़्त कर लेता है उनके ज़ाहिर और बातिन से। और उसमें मतलक़ शक़ नहीं। अफ़्सोस! तुम गुमान करते हो के तुम्हारी हालत सिद्दिक़ीन व आरफीन व आमलीन से पौशीदा रहती है। तुम किस वक़्त तक अपनी उम्रों को नाचीज़ के अन्दर ज़ाय करते रहोगे।

4- वअज़ मोर्रिख़ा 7 जमादीउस्सानी 545हि०

आक़िल बन और झूट मत बोल। तू कहता तो ये है के मैं अल्लाह अज़्ज़ोजल से डरता हूँ हालाँके डरता है दूसरों से। ना किसी जिन्न से डर ना इंसान से ना फरिश्ते से और ना किसी जानवर नातिक़ या ग़ैर नातिक़ से, ना दुनिया के अज़ाब से डर और ना आख़िरत के अज़ाब से बस डरना तो उसी से चाहिए जो अज़ाब देने वाला है(यानी हक़ तआला) अक़्लमंद शख़्स हक़ तआला के बारे में किसी मलामत गर की मलामत से डरा नहीं करता। वो ग़ैर अल्लाह की बात से बेबहेरा है (के किसी की बात पर भी कान नहीं धरता) सारी मख़्लूक़ उसके नज़दीक (गोया) बेकस बीमार और मेहताज है। यही शख़्स और जिनकी भी उस जैसी हालत हो असल अलामत हैं जिनके इल्म से नफ़अ पहुँचता है। जो शरीअत और हक़ायक़े इस्लाम के आलिम हैं वो दीन के तबीब हैं के दीन की शिकस्तगी को जोड़ते हैं। ऐ वो शख़्स जिसका दीन शिकस्ता हो गया है उनकी तरफ क़दम बढ़ाता के वो तेरी शिकस्तगी की बंदिश करें। जिस (खुदा) ने बीमारी उतारी है वही दवा भी उतारता है। (पस इलाज से ना उम्मीद मत हो। बाक़ी रहा बीमारी में मुबतला करना तो वो ख़ास मसलेहत की

वजह से है और) वो मसलेहत को दूसरों से ज़्यादा जानता है। तू अपने रब पर उसके फअेल में तोहमत मत रख। (के बिला वजह बीमार बना दिया) इल्ज़ामात और मलामत के लिए तेरा नफ़्स दूसरों की बनिसबत ज़्यादा मुसतहिक़ है। नफ़्स से कह दे के अता उसके लिए है जो अताअत करे और असा उसके लिए है जो मअसीयत करे (पस ना तो मअसीयत करता ना अमराज़ की लाठियाँ खाता) जब अल्लाह किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फरमाता है तो (उसकी सहेत व दौलत) छीन लेता है। पस अगर वो सब्र करता है तो उसको रफअत बख़्शता है। खुश ऐशी नसीब फरमाता, अताओं से नवाज़ता और सरमाया अता फरमाता है। या अल्लाह हम तुझ से क़ुर्ब का बग़ैर बला के सवाल करते हैं। अपनी क़ज़ा व क़द्र में हमारे साथ शफ़्क़त का बर्ताओ कर और शरीरों की शरारत और बदकारों की मक्कारी से हम को बचा और हमारी हिफाज़त फरमा। जिस तरीक़े से भी तू चाहे और जिस तरह चाहे। हम तुझ से सवाल करते हैं दीन में और दुनिया व आख़िरत में अफ्व और आफीयत का। हम तुझ से सवाल करते हैं आमाले सालेहा की तौफीक़ का और आमाल में इख़्लास का। हमारी दुआ क़बूल फरमा ले।

अल्लाहुम्मग़फिर लीमोअल्लीफीही वली कातीबीही वली वालीदीहिमा